L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- II
B.A PAPER- III
PSYCHOLOGY (HONOURS)
SOCIAL PSYCHOLOGY
TOPIC - Trait theory.

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assistant Professor.
Guest Teacher.
V.S.J. College Rajnagar
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumardsg2018@gmail.com

शीलगुण सिद्धान्त (Trait theory) - इस सिद्धान्त को महान-मानव सिद्धान्त (Great man theory) भी कहा जाता है। नेतृत्व की व्याख्या करने के प्रारंभिक प्रयासों के फलस्वरूप इस सिद्धान्त का जन्म हुआ, यह सिद्धान्त इस विश्वास पर आधारित है कि नेता जन्मजात होता है। बनाया नहीं जाता, इस सिद्धान्त के अनुसार महान मानव या नेता में कुछ ऐसे खास-खास जन्मजात शीलगुण होते हैं जिसके कारण वह अपने अनुयायियों से अधिक प्रभावकारी होता है तथा समूह का नेता बन जाता है। इन शीलगुणों के भेद के कारण नेता हर परिस्थिति में प्रभावकारी होता है। मार्क्स, लूथर, लिंकन, महात्मा गांधी, हिटलर, नेपोलियन आदि नेताओं में कुछ ऐसे ही असाधारण शीलगुण थे, जो उनके अनुयायियों में नहीं थे, तथा जिनके कारण वे एक प्रभावकारी नेता के रूप में लोगों के सामने उभर कर आये।

शीलगुण सिद्धान्त के दो प्रमुख महत्वपूर्ण पूर्वकल्पनाएँ (assumptions) हैं जो निम्नांकित हैं।

(1) इस सिद्धान्त की पहली महत्वपूर्ण पूर्वकल्पना यह है कि नेतृत्व एक सामान्य गुण होता है। एक व्यक्ति जो नेता बन जाता है वह सभी परिस्थितियों एवं समय में नेता बना रहेगा, कुछ ऐसे प्रायोगिक सबूतें (experimental evidences) हैं जो इस पूर्वकल्पना को समर्थन करते हैं। अपने प्रयोगों में पाया कि जब एक समूह के नेता को हटाकर दूसरे में रख दिया जाता है तो वह वहाँ भी समूह का नेता बन जाता है परंतु अनेकों ऐसे उदाहरण हुए हैं जिससे यह साबित हो जाता है कि

II

नेतृत्व एक सामान्य गुण (common attribute) नहीं है/ कार्टर तथा निक्सन तथा मेरी (Merei 1949) द्वारा किये गये महत्वपूर्ण अध्ययनों ने साबित कर दिया है कि नेतृत्व एक सामान्य गुण नहीं है। कोई एक परिस्थिति में नेता होना यह बात की कोई गारंटी नहीं देती है कि वह अन्य परिस्थितियों में भी नेता होगा,

(ii) इस सिद्धान्त की दूसरी पूर्वकल्पना यह है कि नेता में कुछ असाधारण शीलगुण होते हैं जो उन्हें अपने अनुयायियों से भिन्न कर देते हैं। अनेकों शोध अध्ययन किये गये हैं जिनमें यह स्थापित करने की कोशिश की गयी है कि कौन-२ कौन शीलगुण हैं जिनके होने से व्यक्ति समूह का नेता बन जाता है (Stogdill 1948) ने इस सम्बन्ध में किये गये 124 अध्ययनों के परिणामों की समीक्षा (Mann 1959) ने 125 शोध अध्ययनों की समीक्षा किया और इन लोगों ने पाया कि तीन तरह के शीलगुण प्रमुख हैं जिसके होने पर कोई भी समूह का नेता बन जाता है शारीरिक शीलगुण व्यक्तिगत शीलगुण तथा सामाजिक शीलगुण शारीरिक शीलगुणों में व्यक्ति के शारीरिक आकार, शक्ति तथा आयु आदि पर अधिक बल दिया गया है। औपचारिक पद नेता बनने के लिए लम्बा, भारी, स्वस्थ कद काठी तथा अपेक्षाकृत अधिक आयु के व्यक्ति का होना आवश्यक है। काल्डवेल (Caldwell 1953) आदि द्वारा किये गये अध्ययनों से नेतृत्व के अभिवर्धन में इन गुणों की महत्ता साबित हो गयी है। व्यक्तिगत शीलगुणों में बुद्धि आत्मविश्वास, शब्दाडम्बर, प्रभुत्व समायोजन सामाजिकता, परिश्रमशीलता, दूरदर्शिता, चमत्कार तथा कल्पना शक्ति आदि प्रमुख हैं। इसकी पुष्टि अनेकों अध्ययनों में की गयी है जिसमें जिब्ब (Gibb 1961) आदि द्वारा किये गये अध्ययन काफी महत्वपूर्ण हैं कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि अधिक बुद्धिमान नेता की उपयोगिता अपने कार्य में देखते, गति सहयोगियों से दूर करने की प्रवृत्ति दे होता है (Trotsky) तथा महात्मा गांधी के इतिहास का अध्ययन करके और पाया कि किशोरावस्था में लोगों के महत्वपूर्ण

प्रकारों से सामाजिक संबंध रखने में असमर्थता ने बाद में इन लोगों को एक शक्तिशाली नेता के रूप में उभरने में मदद किया, कुछ ऐसे व्यक्तित्व शीलगुण जो होते हैं जो व्यक्ति को नेता बनने में मदद करता है, ऐसे शीलगुणों में समूह स्थिति एक महत्वपूर्ण शीलगुण है। (Mills 1967) ने यह बतलाया है कि सेवा के अधिकार नेता अपना पद अंशतः स्पष्टतः धारण कर पाते हैं, क्योंकि उनका जन्म उच्च परिवारों में हुआ था, (Warner & Abegglen 1955) ने भी अपने अध्ययन में पाया कि अधिकतर अमेरिकन व्यवसायी प्रबंधक अपना पद स्पष्टतः धारण कर पाते हैं क्योंकि उनका जन्म उच्च परिवारों में हुआ था, एक अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पाया कि जब कुछ व्यक्तियों को यह विश्वास दिलाया गया कि उनका पद या स्थिति समूह में काफी ऊँचा है तो वे अपने व्यवहारों में नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन प्रारंभ कर दिये।

शील-गुण-सिद्धांत (Trait theory) की आलोचना: आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिकों को मान्य है आजकल नहीं, इसका प्रमुख कारण यह है कि इस सिद्धांत की कुछ कमजोरियाँ हैं जिसमें निम्नांकित प्रमुख हैं।

(i) इस सिद्धांत द्वारा वैसे सार्वभौमिक शीलगुणों का पता नहीं चलता है जो सभी नेताओं में समान रूप से पाये जाते हैं, हालाँकि ऐसे शीलगुणों का पता लगाना इस सिद्धांत का एक मुख्य उद्देश्य है। इतना ही नहीं नेतृत्व व्यवहार एवं शीलगुणों के बीच समाज मनोवैज्ञानिकों ने बहुत निम्न सहसंबंध पाया है। जिससे इस तथ्य की ओर इशारा होता है कि मात्र शीलगुणों के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता है कि कौन समूह का नेता है या कौन व्यक्ति समूह का नेता हो सकता है।

(ii) इस सिद्धांत के समर्थन में किये गये अध्ययनों में असंगति एवं विरोधाभास अधिक, फलतः इस सिद्धांत को अधिक विश्वसनीय तथा वैध (Valid) नहीं माना जा सकता है।

(iii) इस सिद्धांत द्वारा इस तथ्य की भी व्याख्या नहीं की पाती है कि व्यक्ति जिन्हें अपने जीवन की प्रारंभिक अवस्थाओं में अधिक संघर्ष करना पड़ा

जिन्हें असफलता का सामना करना पड़ा, उनमें से कुछ नेता लोग तो महान जैसे गांधी और लेनिन कहे गये परन्तु अधिकतर लोग सिर्फ नेता ही कहे जाते रह गये।

इन आलोचनाओं के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शीलगुण सिद्धान्त इसे नेता नेतृत्व के उद्भव की व्याख्या होती है। और न ही उसकी प्रभावशीलता की अतः आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिकों ने इस सिद्धान्त को कुछ नये सिद्धान्तों द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया है। समाज मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रियों ने नेतृत्व के संबंध में कुछ विशेष प्रश्न का समाधान चाहा है। इन प्रश्नों में प्रमुख है, व्यक्ति समूह के नेता कैसे बन जाते है, क्या नेता जन्मजात होते है, एक नेता कुछ परिस्थिति में प्रभावकारी होता है। परंतु दूसरे तरह की परिस्थिति में अप्रभावकारी आदि कई - इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर देने के लिए कई - मनोवैज्ञानिकों ने नेतृत्व के कुछ सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। जिनमें तीन प्रमुख है

(i) शीलगुण सिद्धान्त -

(ii) परिस्थितिजन्य सिद्धान्त

(iii) सांयोगिकता सिद्धान्त -

फीडलर सिद्धान्त, पथ - लक्ष्य सिद्धान्त, [illegible] - सिद्धान्त - इन सिद्धान्तों की आलोचनात्मक इस प्रकार है।

Dr. Pramod Kumar Sahu
Date - 08/09/2020
Sub. Psychology